जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – मार्च 2022 ।। अंक – 20 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

जीविका समूह से मिला प्रगति का रास्ता (पृष्ठ – 02)

मुन्नी देवी ने किया जिले का नाम रौशन (पृष्ठ – 03)

बच्चों के जीवन की नींव होती हैं हजार दिन (पृष्ठ – 04)

महिलाएं हो रहीं संगठित, सशक्त एवं स्वाबलंबी

8 मार्च को पूरी दुनिया में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। लेकिन बिहार में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के मायने अब बदल गए हैं। यहां महिला सशक्तीकरण हेतु 2007 में शुरू की गई जीविका परियोजना की वजह से ग्रामीण स्तर की महिलाएं संगठित, सशक्त एवं स्वाबलंबी बनकर उभरी हैं। इतना ही नहीं महिलाओं की सजगता, जागरूकता एवं सक्रियता ने समाज को भी नई राह दिखाई है। लिहाजा बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाली आधी आबादी को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का जो सपना देखा गया था, अब वह फलीभूत होने लगा है।

महिला सशक्तीकरण की दिशा में निम्न प्रकार के बदलाव आए हैं–

- जीविका के सामुदायिक संगठनों से जुड़ी महिलाएं अब अपने स्वयं के नाम से पहचानी जाने लगी हैं, जबकि पूर्व में वे अपने पति, बेटे या आपने अपने मायके के गांव के नाम पर पुकारी जाती थीं।
- सामुदायिक संगठन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों में महिलाओं की पूर्ण सक्रियता की वजह से उनमें विभिन्न विषयों पर जागरूकता एवं गतिशीलता बढ़ी है।
- समूह के माध्यम से आसानी से ऋण उपलब्ध होने एवं जीविकोपार्जन गतिविधियों से जुड़ने की वजह से महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं। इन महिलाओं ने ऐसे कई क्षेत्रों में भी अपनी छाप छोड़ी है, जिसे सिर्फ पुरुषों के एकाधिकार वाला क्षेत्र माना जाता था। इससे समाज एवं परिवार में महिलाओं का मान–सम्मान बढ़ने के साथ ही वे अब निर्णयक भूमिका निभाने लगी हैं।
- जीविका के सामुदायिक संगठनों की वजह से सामजिक या लैंगिक भेदभाव कम हुआ है। अब समाज की सभी महिलाएं बिना किसी भेदभाव के एक–दूसरे के साथ बैठकर सामजिक मुद्दों पर चर्चा करती हैं और उसका समाधान निकालती हैं।
- सामुदायिक संगठनों की बैठकों में दीदियों को सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी जाती है, इससे उनमें जागृति आई है और वे मनरेगा, राशन, पेंशन, बीमा आदि सुविधाओं का लाभ उठा पा रही हैं।
- ग्रामीण स्तर पर सभी घरों में शौचालय के निर्माण एवं उसके नियमित उपयोग से महिलाओं का मान–सम्मान बढ़ा है।
- जीविका दीदियों की मांग पर ही बिहार के माननीय मुख्यमंत्री द्वारा बिहार में पूर्ण शराबबंदी की गई थी। यह जीविका दीदियों के सशक्तीकरण को दर्शाता है। शराबबंदी की वजह से घरेलू हिंसा एवं यौन हिंसा में काफी कमी आई है।
- समूह से जुड़ी निरक्षर दीदियों ने भी अब हस्ताक्षर करना सीख लिया है। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा है।
- बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं में राजनीतिक स्तर पर भी भागीदारी बढ़ी है। समूह से जुड़ी महिलाओं ने बड़े पैमाने पर पंचायती राज संस्थानों में अपनी उपस्थिति दर्ज की है। साथ ही राज्य में हुए पिछले कई चुनावों में बड़ी संख्या में मताधिकार का प्रयोग कर लोकतांत्रिक प्रणाली को मजबूत करने में अग्रणी भूमिका निभाई है।

जीविका के माध्यम से बिहार की महिलाओं में आए इस बदलाव की झलक प्रत्येक वर्ष 8 मार्च को मनाए जाने वाले अतंरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में स्पष्ट तौर पर देखी जा सकती है। इस अवसर पर सामुदायिक संगठनों से जुड़ी महिलाएं अपने जीवन में आए बदलावों पर चर्चा करती हैं। रैली एवं प्रभात फेरी के माध्यम से समाज को जागरूक करती हैं और भविष्य की ओर मजबूती के साथ कदम बढ़ाने का संकल्प लेती हैं।

जीविका समूह से मिला प्रगति का रास्ता

मुन्नी देवी जिला रोहतास के प्रखंड संझौली में गाँव उदयपुर के निवासी हैं और मीरा जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं। अपने गाँव में मुन्नी देवी सफलता की प्रतिक हैं। बुलंद हौसला और मेहनत के दम पर आज वे आर्थिक रूप से मजबूत हुई हैं साथ ही साथ अपने गाँव की सारी दीदियों को सहयोग करते हुए आगे बढ़ रही हैं।

समूह से जुड़ने के बाद मुन्नी देवी को काफी फायदा हुआ है। वे जीविका मित्र के पद पर काम करती हैं। समूह से कई बार वे ;ण ली हैं और उसे खेती तथा पोल्ट्री फार्म व्यवसाय में लगायी हैं। इसके अलावे वे दीदी की नर्सरी भी चलाती हैं। मगर पश्वल्ट्री फार्म उनका मुख्य व्यवसाय है। पश्वल्ट्री फार्म की शुरुआत उन्होंने वर्ष 2016 में की थी और लगातार इसे चला रहीं है और मुनाफा कमा रही हैं। इस पश्वल्ट्री फार्म से सालाना उन्हें लगभग 2 लाख का लाभ हो जाता है। मुन्नी देवी बहुत ही जल्द एक और पश्वल्ट्री फार्म शुरू करना चाहती हैं साथ ही साथ मतस्य पालन का व्यवसाय भी करना चाहती हैं।

वर्ष 2015 में मुन्नी देवी जब जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थीं उस समय उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। वे छोटा कच्चा मकान में रहती थीं। आज उनके अपने पैसे से बनाया हुआ पक्का मकान हैं जिसमें वे अपने परिवार के साथ रहती हैं। वे गर्व और खुशी से कहती हैं कि वे अपने गाँव की पहली महिला हैं जो जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थी। वे कहती हैं कि जीविका के गाँव में आने से सिर्फ उनका ही नहीं परंतु पुरे गाँव का विकास हुआ है और हो रहा है।

दहेज प्रथा काजल दीदी का साहस

बहादुर पुर पंचायत, प्रखंड अलौली जिला खगड़िया की काजल देवी की बहादुरी की सभी प्रशंसा कर रहे है। काजल देवी साल 2009 से जीविका से जुड़ी है। अभी दीदी अलौली प्रखंड के संगम संकुल संघ की अध्यक्ष पद पर कार्य कर रही है। दीदी की विवाह बहुत ही कम उम्र में हो गया । दीदी के पति का नाम अनिल कुमार है और इनके तीन बच्चें है। 1 लड़का और 1 लड़की 1 बड़ा बेटा दसवीं और बेटी आठवीं कक्षा में पढ़ रहीं है दीदी का छोटा बेटा, अभी सिर्फ 6 साल का है। उनके पति रिक्शा चलाकर अपने परिवार का भरण –पोषण करते है। अपने संकुल संघ के सभी कार्यों को दीदी बड़े ही मन लगाकर करती हैं। साथ ही दीदी सामाजिक गतिविधियों में भी बड़ी सकियता के साथ जुड़ी रहती है। एक बार दीदी अपने संकुल संघ के प्रतिनिधि निकाई बैठक कर रही थी। उसमें किसी सदस्य के द्वारा दहेज मॉगने को लेकर शिकायत की गई। दीदी ने ठीक उसी समय बिना किसी देरी के अपने संकुल संघ के कुछ सदस्यों के साथ उस सदस्य के घर पर गयी। और समझाया परंतु लड़की के परिवार वाले मजबूर दिखे। फिर दीदी उस अपने ग्राम संगठन की कुछ दीदीयो को लेकर बिना डरे दीदी के लड़की के ससुराल पहुँच गये। वहाँ भी जाकर दीदी ने सभी को समझाया कि दहेज लेना और देना दोनों कानून अपराध है। परंतु उनको यह बात समझ नहीं आयी आयी अपने जिद पर अड़े रहे। अतंतः दीदी के समझाने के बाद लड़की वालों ने अपनी तरफ से रिश्ता तोड़ दिया। फिर काजल दीदी ने उसी लड़की का विवाह बिना दहेज के अच्छे लड़के से करवाया। सिर्फ यही नहीं वह लड़की पढ़ी लिखी थी इसलिए अभी जीविका में ही जीविका मित्र के पद पर कार्य कर रही है। वह लडकी काजल दीदी को धन्यवाद देते नहीं थकती। काजल दीदी ऐसी और सी सामाजिक गतिविधि से जुड़ी रहती है और समाज को जागरूक करने का कार्य करती रहती है। स्वच्छता एवं पोषण के कार्य के लिए दीदी को सम्मानित किया जा चुका है।

मुन्नी देवी ने किया जिले का नाम रौशन

आजादी के अमृत महोत्सव के तौर पर नई दिल्ली के भीम ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में मुन्नी देवी को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। बिहार से सिर्फ पांच लोगों का चयन प्रोजेक्ट उन्नति के तहत किया गया था। इनमें से सिर्फ मुन्नी देवी ही हैं, जिन्हें जीविका समूह से पुरस्कार के लिए चुना गया थाद्य मुन्नी देवी के सम्मानित होने से न सिर्फ चकाई प्रखंड बल्कि जमुई जिले का नाम भी रौशन हुआ है।

जमुई जिले की चकाई प्रखंड के कियाजोड़ी पंचायत के भदवारी टोला गाँव की रहने वाली मुन्नी देवी कुंती जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य है। प्रोजेक्ट उन्नति के तहत मुन्नी देवी आरसेटी जमुई से बकरी पालन का प्रशिक्षण ली थी। प्रशिक्षण लेने के बाद मुन्नी देवी बकरी पालन कर अपनी आजीविका चलाने के साथ–साथ आत्मनिर्भर होने की मिसाल पेश कर रही हैं।

मुन्नी देवी के परिवार में उनके पति के अलावा दो बेटा और एक बेटी है। इनमें से मुन्नी देवी का बड़ा बेटा दिव्यांग है। मुन्नी देवी के पति बालेश्वर रामाणी खेती करके परिवार चलाते है। मुन्नी देवी के सम्मानित होने से उनके घर–परिवार में तो खुशी का माहौल है ही साथ ही समाज के लोगों का भी नजरिया बदला है। दिल्ली से सम्मानित होकर लौटने बाद दीदी बताती हैं की वह सोची भी नहीं थी की वह कभी हवाई जहाज से सफ़र करेंगी। यह सब जीविका के प्रयास से ही संभव हुआ है, जिसकी बदौलत उन्हें प्रोजेक्ट उन्नति के तहत बकरी पालन का प्रशिक्षण आरसेटी जमुई से मिला था।

हमें मंजूर नहीं है कम उम्र में शादी

पूर्णियाँ जिला के कसबा प्रखंड के कुल्लाखास गाँव में 15 साल की नाबालिग लड़की की शादी तय होने की खबर जीविका दीदियों एवं जीविका के सहयोग से संचालित स्वाभिमान परियोजना से जुड़ी किशोरी सखी को मिली। सूचना मिलने के बाद सत्यम जीविका महिला ग्राम संगठन की दीदियां एवं किशोरी सखी उस परिवार के पास गयी तो उसके परिजन उनलोगों के साथ गाली–गलौज करने लगे। परिवार के द्वारा विवाह कार्यक्रम को रोकने से सीधा मना कर दिया गया। वे लोग लुसी को बालिग बताते रहे। किशोरी सखी ने अपने सहयोगी समूहों के सक्रीय सदस्यों के सहयोग से इस मुद्दे को गाँव के प्रबुद्ध ग्रामीणों तक पहूँचायी।

लुसी कुमारी को बाल विवाह के शिकार होने से बचाने हेतु उनके परिवार के सभी सदस्यों एवं उपस्थित मेहमानों को जीविका दीदियों द्वारा बाल विवाह प्रतिशेध अधिनियम की जानकारी दी गई। इसकी भी जानकारी दी गई कि नाबालिग के विवाह में शामिल होने वाले बाराती, हलवाई, केटरिंग एवं पंडित सभी दोषी होते हैं। बताया गया कि किस प्रकार कम उम्र में विवाह होने से बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जिस लड़की की शादी कम उम्र में हो जाती है, उसके स्कूल से निकल जाने की संभावना भी बढ़ जाती है तथा उसके कमाने और समुदाय में योगदान देने की क्षमता भी कम हो जाती है। वह घरेलू हिंसा का भी शिकार होती है। इस प्रकार लुसी कुमारी को सामाजिक दबाव के द्वारा बाल विवाह का शिकार होने से बचा लिया गया।

वर्तमान में लुसी कुमारी स्नातक की पढाई करते हुए बाल विवाह को समाज से समाप्त करने हेतु लोगों को प्रेरित कर रही है। लुसी कुमारी से प्रेरित होकर कुल्लाखास पंचायत में जीविका दीदियों के द्वारा लुसी कुमारी की तरह हर समुदाय की नाबालिग लड़कियों को बाल विवाह से मुक्त करने का कार्य किया जा रहा है।

बच्चों के जीवन की नींव होती हैं हजार दिन

गर्भावस्था और जन्म के बाद के पहले 1,000 दिन नवजात के शुरुआती जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था होती है। आरंभिक अवस्था में उचित पोषण नहीं मिलने से बच्चों के मस्तिष्क विकास में भारी नुकसान हो सकता है, जिसकी भरपाई कभी नहीं हो पाती है। गर्भावस्था और जन्म के बाद पहले वर्ष का पोषण बच्चों के मस्तिष्क और शरीर के स्वस्थ विकास और प्रतिरोधकता बढ़ाने में बुनियादी भूमिका निभाता है। विशेषज्ञों के अनुसार, इंसान की जिंदगीभर का स्वास्थ्य उसके पहले 1000 दिन के पोषण पर निर्भर करता है। इस अवधि में उसे मिले पोषण का संबंध उस पर मोटापा और क्रश्वनिक बीमारियों से भी है। सही देखभाल एवं पोषण की कमी के कारण शिशु के शरीर का सही विकास नहीं होता तथा उनमें सीखने की क्षमता में कमी, स्कूल में सही प्रदर्शन नहीं करना, संक्रमण और बीमारी का अधिक खतरा होने जैसी कई अन्य गंभीर समस्याएं हो सकती हैं। इसलिए जीवन के शुरूआती 1000 दिनों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

जीवन के शुरुआती 1000 दिनों में देखभाल का महत्व

- शिशु के माँ के गर्भ में आने से लेकर उसके दूसरे जन्मदिन तक के कुल दिनों को मिलाने पर 1000 दिन होते हैं। जीवनचक्र का यह सबसे महत्वपूर्ण पडाव है।
- इसी दौरान बच्चे के दिमाग का सबसे अधिक विकास होता है। इस उम्र में बच्चे के पोषण और स्वास्थ्य का ध्यान रखा जाये तो उसे पूरी जिन्दगी उसका बेहतर स्वास्थ्य और मनोबल बना रहता है।
- शिशु के सभी अंगो का निर्माण माँ के गर्भ में ही हो जाता है, जिनका विकास जन्म के बाद भी होता रहता है।
- माँ का पोषण शिशु के गर्भ में विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, यदि माँ का पोषण अच्छा हो तो इसका प्रभाव शिशु के गर्भ में होने वाले विकास पर पड़ता है।
- गर्भ से बाहर आने के बाद, शिशु के दो वर्ष के होने तक उसका शारीरिक और मानसिक विकास जारी रहता है।
- इस समय बच्चे के पोषण पर किया गया निवेश, भविष्य में उसके स्वास्थ्य, शिक्षा और कमाने की क्षमता पर अच्छा प्रभाव डालता है। शुरुआती 1000 दिनों में अच्छा पोषण पाने वाले बच्चे शिक्षा में बेहतर होते हैं।
- 1000 दिनों में उचित देखभाल और प्रयासों से लगभग हर वर्ष 10 लाख से अधिक जिंदगियों को बचाया जा सकता है।
- इस समय में सही व्यवहार अपना के गरीबी के पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाले कुचक्र को तोडा जा सकता है।
- इसलिए हमें जीवन के शुरुआती 1000 दिनों में अपना समय, उर्जा और संसाधन इसी में लगाना चाहिए।

गर्भावस्था के पूर्व और गर्भावस्था के दौरान माता का पोषण

- महिलाओं को उनके पहली बार गर्भवती होने से पहले ही अच्छी तरह पोषित होने की जरुरत होती है।
- इसके लिए आवश्यक है कि महिला 21 साल की उम्र होने के पहले माँ न बने और साथ ही उसके दो गर्भधारण के बीच कम से कम 3 साल का अंतर हो।
- गर्भावस्था के दौरान और बच्चे को दूध पिलाने के दौरान अधिक और पौष्टिक भोजन करने की जरुरत होती है।
- सभी गर्भवती महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान आयरन फोलिक एसिड की 180 गोलियां खानी चाहिए।
- इस दौरान गर्भवती महिला को अपने रोज के खाने में 10 खाद्य समूहों में से कम से कम 5 खाद्य समूहों या अधिक को शामिल करना चाहिए।
- गर्भावस्था के दौरान महिला और उसके गर्भ में पल रहे बच्चे की सभी स्वास्थ्य संबंधी जांच एद्गएनद्गएमद्ग या डश्वक्टर के द्वारा समय पर होनी चाहिए।

गर्भावस्था से लेकर बच्चों के दूसरे जन्मदिन तक के इन कुल 1000 दिनों में इन बातों का ध्यान रखकर बच्चों को एक बेहतर भविष्य दे सकते हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, पूर्णियाँ
- श्री बिप्लव सरकार – प्रबंधक संचार, कटिहार
- श्री विकास कुमार राव – प्रबंधक संचार, सुपौल
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, बक्सर
- सुश्री जूही – प्रबंधक संचार, खगड़िया